छत्तीसगढ़ी संस्कृति की पहचान हैं 'तीजन'

अल्पना त्रिपाठी

सदियों से समाज अपनी जातीय चेतना को कथा कहानी के माध्यम से अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करता आ रहा है। ये कथाएँ हमारे पुरखों-पूर्वजों की स्मृतियों और कल्पनाओं के संचित कोष हैं। महाभारत या पांडवों की कहानी भी भारतीय जातीय चेतना का एक अभिन्न अंग रही है। प्रायः बड़े विद्वानों की सभा और कथावाचकों के सान्निध्य में ये कथाएँ कही-सुनी जाती रहीं। शुरुआत में इनकी पहुँच विद्वान मनीषियों के आश्रमों और राजाओं-सेठों के महलों तक पहुँच रखने वाले विशिष्ट वर्गों तक ही सीमित थी। पर जैसा कि कबीरदास जी कहते हैं "ताथै कहिबै लोकाचार, बेद-कतेब कथै ब्यौहार।" अर्थात् धीरे-धीरे वेद, पुराण (शास्त्रों) की बातें रिसते-रिसते लोक में पहुँचती जाती हैं और लोकाचार के रूप में व्यवहृत हो जाती हैं। जाहिर सी बात है कि जल से इतर बहते हुए जल के समान लोकभाषा में ये कहानियाँ गाँव के चौक-चौपालों से दादी-नानी की गोद में लेटे नौनिहालों की दुनिया तक पहुँची। कुछ इसी तरह से लोक ने पांडवों की कथा को पंडवानी कला के रूप में सृजित किया होगा। जो आज भी लोक में बदस्तूर जारी है।

यह बात तो हम सभी अपने अनुभव से जानते हैं कि छोटे-छोटे बच्चे भी कहानी सबसे नहीं सुनते। कहानी उसी से सुनने की जिद करते हैं या सुनना चाहते हैं, जिसको कहानी सुनाने का ढंग आता हो। कोई भी साधारण-से-साधारण कहानी सुनाने वाले के विशिष्ट अंदाज से भी कला में परिवर्तन हो सकता है। और बात जब महाभारत जैसी असाधारण कहानी की हो तो कहना ही क्या! कहानी अपने उरूज पर पहुँचती है, अपनी नाटकीय प्रस्तुति के कारण और नाटक अपनी प्रदर्शन क्षमता के साथ उत्कर्ष को प्राप्त करता है- कथा की बुनावट एवं कसावट के कारण वहीं गायन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है स्वर-लय-ताल के साथ ही गायक की तन्मयता के कारण। पंडवानी एक ऐसी लोक शैली है, जहाँ कथा-नाटक एवं गायन तीनों का अद्भुत, अनोखा संगम दिखायी देता है और यदि कोई कलाकार इन तीनों अमूर्त विधाओं से बनने वाले मूर्त रूप की कल्पना करता है तो, जो छवि निर्मित होगी वह सिर्फ और सिर्फ तीजनबाई की ही होगी। पंडवानी की पर्याय बन चुकी तीजनबाई, पद्म विभूषण तीजनबाई, छत्तीसगढ़ ही नहीं, अपितु भारतीय कला की गौरव तीजनबाई हैं।

लगभग बारह वर्ष पहले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में मैंने तीजनबाई को पंडवानी गाते देखा-सुना था। उसकी स्मृतियाँ आज भी मेरे मन में जीवंत हैं। ये तीजनबाई और लोककला का जादू ही है कि उनके अमिट सम्मोहन से कोई नहीं बच पाया। उनसे मिलने का सुअवसर अब मिला वो भी उनके घर जाकर। इस अविस्मरणीय मुलाकात और उनसे हुए सार्थक संवाद की कुछ लड़ियाँ सुधी पाठकों हेतु मैं प्रस्तुत कर रही हूँ–

अपने बचपन को याद करते हुए तीजनबाई बातचीत शुरू करती हैं–"मैं तेरह साल की उम्र से मंच पर प्रस्तुति दे रही हूँ और जब मंच पर नहीं होती तब मंच के नीचे भी पंडवानी ही गा रही होती हूँ।"

अपने नाम और जन्म के बारे में वह कहती हैं कि "जिस समय देश आजाद हुआ था उसी दौरान आम के पेड़ की छाँव में मेरा जन्म हुआ था। तीज त्यौहार के दिन जन्म होने के कारण ही मेरा नाम माताजी ने तीजन रखा।" प्रकृति से तीजनबाई का जन्म का नाता है तभी तो आज भी अपने जन्म के 75 वें वर्ष में वह चैत्र नवरात्र के नवे दिन इमली के पेड़ के नीचे बड़ी सहजता और प्रेम से गुजार कर बहुत आनंदित रहती हैं।

तीजनबाई से मिलना एक भरी पूरी लोक-संस्कृति से मिलना है। यह लोक की सरलता, सहजता और उदात्तता का साक्षात्कार करना है। जितनी सहजता से पंडवानी की कथा तीजनबाई सुनाती हैं, उसे सीखने की यात्रा उतनी सीधी-सरल नहीं रही। तीजन पारधी समाज से आती हैं, जिनकी बसाहट दुर्ग-भिलाई के गनियारी गाँव में है। इसीलिए उनके दादा-नाना का घर मायका-ससुराल सब आस-पास ही अवस्थित है। पंडवानी सीखने के बारे में वह कहती हैं कि नाना बृजलाल महाभारत की कहानियाँ कहते थे। उन्हें इस कथा को गाते-सुनाते देखना तीजन का सबसे प्रिय काम था। धीरे-धीरे उन्हें ये कथाएँ याद होने लगीं और वह भी उनका अनुकरण करते हुए गाने लगीं। पिता श्री धनुक लाल को तीजन का पंडवानी गाना बहुत नागवार गुजरा था। बालिका तीजन को रोकने की बहुत चेष्टा की उन्होंने। थप्पड़ बरसाए, बचाने आती माता को भी नहीं बख्शा, लेकिन उनकी सारी कोशिशें व्यर्थ गयीं। तीजन को तो महाभारत की कथा में ही अपनी दुनिया दिखने लगी थी।

मंच पर पहली प्रस्तुति के सवाल पर तीजनबाई का चेहरा खिल उठता है। बड़े उत्साह से वह बताती हैं कि "तेरह साल की उम्र में मैंने चंदखुरी गाँव में पहली बार मंच पर पंडवानी की कथा सुनायी। उस समय यह कथा अठारह दिनों तक चलती थी। कार्यक्रम कीमत पर तय नहीं होते थे बस एक नारियल फूल पर करार हो जाता था। कार्यक्रम के दौरान जो चढ़ोत्तरी (चढ़ावा) मंच पर मिलता था, वही कलाकारों का मानदेय होता था।" इस तरह से कापालिक शैली में पहली बार मंच पर किसी महिला का पदार्पण हुआ।

यह पूछने पर कि क्या उस छोटी-सी उम्र में आपने पद्म विभूषित, विश्वविख्यात तीजनबाई के, आज के कद की कल्पना की थी ? कोई सपना देखा था?

तीजनबाई ने गहरी श्वास छोड़ते हुए जवाब दिया कि "बिना सपना देखे कोई कहीं ऊँचाई पर नहीं पहुँच सकता। सपना देखने पर ही मेहनत करने की ताकत और हिम्मत मिलती है।"

हाल ही में बॉलीवुड के हीरो रणबीर कपूर ने घर आकर तीजनबाई से मुलाकात की। अभी बॉलीवुड के ही किसी बड़े डायरेक्टर ने तीजनबाई पर बायोपिक बनाने के लिए उनसे संपर्क किया है, जिसमें लीड हीरोइन में विद्या बालन के होने की चर्चा है। तीजनबाई ने आठ बार पेरिस जाकर पंडवानी की प्रस्तुति दी है। विश्व के तमाम देशों में शो कर चुकी हैं। जब मैंने उनसे पूछा कि इतनी शोहरत पाकर आपको कैसा लगता है? उनका दो टूक जवाब था-'कुछो नहीं लागत ओ' (कुछ नहीं लगता)। बहुत गरीबी देखी है मैंने, अब पैसे और पुरस्कार से भरी दुनिया भी देख रही हूँ। तब भी बोरे-बासी और टमाटर चटनी खाती थी, आज भी वही खाती हूँ। पुरस्कार मिला, तो हाँ भाई मिला। पद्म विभूषण मिला, तो हाँ भाई मिला। मेरे गुरु जी ने

मुझे अनमोल शिक्षा दी। अभिमान नाशवान है सरलता ही महान है। कभी घमंड नहीं करना जीवन में। जो समय और ऊर्जा घमंड करने में खर्च करें उसी समय को काम करने में लगा।

किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है कि “Simples can not be defined, Simples can only demonstrated” सरलता को परिभाषित नहीं किया जा सकता सरलता को केवल प्रदर्शित किया जा सकता है। जब भी मैं तीजनबाई की सरलता और सहजता, जिसको तीन घंटे के इस मुलाकात में मैंने पल-पल महसूस किया, व्यक्त करने की कोशिश करती हूँ, बयाँ करने के लिए शब्द ढूंढती हूँ, मैं सर्वथा असफल रहती हूँ।

पचहत्तर वर्ष की उम्र पूरी कर रही तीजनबाई किसी बच्ची की तरह निश्छल और पारदर्शी हैं। द्रौपदी के जीवन के दुखों की बात करते हुए उनकी आंखें भर आती हैं।

लगभग 62 वर्षों में उन्होंने द्रोपदी की दारुण कथा को हजारों बार साझा किया होगा, पर आज भी कथा में ऐसे डूबती हैं मानो पहली बार कह सुन रही हैं। वह कहती हैं "कहने वाले तो अनेक प्रकार से कथा कहते हैं, पर जिस प्रकार जो मैं सुनाती हूँ और लोगों को डुबाती हूँ, रुलाती हूँ, हँसाती हूँ, गुस्सा दिलाती हूँ, यह काम मैं बचपन से लेकर अभी तक कर रही हूँ, आगे भी करती रहूँगी।"

बचपन से अभी तक का व्यक्तिगत जीवन आपका कैसा रहा ? किन-किन रूपों में आप का संघर्ष रहा?

"संघर्ष हर व्यक्ति के जीवन में रहता है किसी के जीवन में कम तो किसी में ज्यादा। पंडवानी ने दुखों से संघर्ष की बहुत प्रेरणा दी। जब इतने समर्थ देवी-देवता भी दुख से नहीं बच पाए तो तीजन क्या है? बचपन में पिता द्वारा कड़ी यातनाएँ, शादी हुई तो पति नहीं ले गया, बाद में गृहस्थी बसायी। तीन बच्चे हुए, पर उस दूसरे पति को मेरा मंच पर जाना, कार्यक्रमों के लिए बाहर जाना पसंद नहीं था। कुछ दिनों बाद उससे तलाक हो गया। बाद में एक और शादी की। साथ काम करने वाले कलाकार से। पर वो शादी भी जल्दी ही टूट गयी। जवान बेटा खत्म हो गया। एक बेटी कम उम्र में भगवान को प्यारी हो गयी।" शेष दुखभरी कहानी उनकी आंखों से छलकते आँसुओं ने पूरी की।

दोनों पतियों से मतभेद किस बात को लेकर था। दोनों को ही मालूम था कि आप कलाकार हैं, फिर तकरार क्यों हुआ ?

"दूसरे वाले पति का घर यहीं मेरे पड़ोस में है। अच्छा आदमी था। दोनों को मेरा काम करना पसंद नहीं था। पहले वाले को लगता था कि मुझे मंच छोड़ देना चाहिए और मैं किसी भी कीमत पर पंडवानी छोड़ने को तैयार नहीं थी। बाद वाले पति को लगता था कि मैं उसकी हर बात मानूँ। वह मुझ पर पूर्ण नियंत्रण करना चाहता था। कब शो करना है, कहाँ करना है, नहीं करना है, सब उसकी मर्जी से।"

वह भी कलाकार थे कहीं ऐसा तो नहीं कि आपसे ईर्ष्या हो गयी हो ?

"मैं नहीं जानती" उनका सीधा जवाब था।

पंडवानी के प्रति इतनी दीवानगी? यह पूछने पर उन्होंने कहा कि–

"मेरे गुरु जी अनपढ़ थे। मैं भी दस्तखत छोड़ कुछ नहीं पढ़-लिख पाती, लेकिन इस विधा को सीखने के दौरान मैंने गुरु की बातों को मन में गांठ बाँध कर रखी।

यह पंडवानी हमारी पहचान है। उसके लिए कोई समझौता नहीं। गुरु की बात मानना ही भगवान की पूजा है। मेरा बेटा जब दिवंगत हुआ तो उसके तुरंत बाद ही मैं कार्यक्रम करने गयी, क्योंकि कार्यक्रम पहले से ही तय था। कितना कठिन रहा होगा मेरे लिए आप खुद स्त्री हैं, महसूस कर सकती हैं, उस पीड़ा को। पर कलाकार का धर्म मैंने उस परिस्थिति में भी निभाया।"

पंडवानी गायन में तीजन अपना सच्चा साथी तंबूरे को ही मानती हैं। तंबूरा, जो कभी अर्जुन का धनुष बन जाता है तो कभी भीम की गदा। तीजन इस तंबूरे में तीन देवताओं का वास मानती हैं। वीणा के तार वाग्देवी की कृपा से हैं, तो कृष्ण का मोरपंख हर परिस्थिति में साथ देने का आश्वासन है। वहीं गदा के रूप में तंबूरा संकटमोचन है। पंडवानी गायन में तीजन के हाथ में तंबूरे की यति-गति कहानी के आवेग और प्रभाव को बढ़ा देती है।

पंडवानी गायन में हारमोनियम, तबला, मंजीरा, ढोलक वादकों के साथ ही रागी की क्या भूमिका होती है इसको बताते हुए तीजनबाई कहती हैं कि "पूरी कथा संवाद शैली में प्रस्तुत होती है। संवाद से ही कथा खुलती है। ऐसे में जो रागी होते हैं वो मेरी कही गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हैं, जिससे कहानी आगे बढ़ती है। प्रायः हव जी, हो जी, अच्छा, जैसी आवाजें वो निकालते हैं।"

जिस द्रौपदी की कथा आप सुनाती हैं उन्हें अपने जीवन में असीम दु:ख उठाने पड़े। और आपको भी जीवन में कुछ कम दु:ख नहीं सहना पड़ा। आप कभी अपने जीवन के दु:खों की तुलना द्रौपदी के दुखों से करती हैं ?

तीजनबाई बताती हैं कि "मैं एक साधारण स्त्री और द्रौपदी तो साक्षात देवी माता, कोई तुलना हो सकती है भला! हाँ यह है कि द्रौपदी को जीवन में दूसरों ने दु:ख दिया और मुझे अपने सगों ने।"

क्या आप अपने समकालीन छत्तीसगढ़ के प्रख्यात लोक रंगकर्मी हबीब तनवीर जी से कभी मिली हैं ?

इस प्रश्न के जवाब में तीजनबाई बताती हैं कि "एक बार हबीब तनवीर जी, एक कार्यक्रम के सिलसिले में हम लोगों को दिल्ली ले गये थे, साथ में छत्तीसगढ़ के अन्य कलाकार साथी भी थे। कार्यक्रम के अगले दिन अखबार ने मेरी तस्वीरों को प्रमुखता से छापा। खैर उसके बाद से तनवीर जी के साथ कभी कोई काम करने का अवसर नहीं मिला।"

तीजनबाई ने यह भी बताया कि तमाम देशों की यात्राओं में सबसे ज्यादा उन्हें पेरिस पसंद आया, क्योंकि स्वतंत्रता, निडरता और कला को भरपूर सम्मान देने में पेरिसवासियों का कोई जवाब नहीं। वहाँ लोग कलाकारों की बहुत सेवा करते हैं। भाषा की कोई जरूरत ही नहीं है। मैंने भी प्रस्तुति हिंदी में तैयार की

थी। पर जब वहाँ विभिन्न देशों से आए कलाकारों को देखा-सुना सब अपनी-अपनी भाषा में प्रस्तुति दे रहे थे। मैं उनकी भाषाएँ नहीं समझ पा रही थी, लेकिन उनकी कला समझ में खूब आ रही थी। तभी मैंने भी निश्चय कर लिया कि मैं भी हिंदी में सुनाने की तकलीफ क्यों उठाऊँ? उनके लिए तो जैसे हिंदी वैसे छत्तीसगढ़ी। अपना देश तो सबसे प्यारा है। खान-पान, पहनावा, संस्कृति सब में सबसे समृद्ध।

'क्या एक महिला कलाकार होने के नाते आपको कभी किसी मुश्किल का सामना करना पड़ा ? या कभी किसी प्रस्तुति के दौरान कोई अप्रिय स्थिति बनी हो ? जिसको आप हमसे साझा करना चाहती हों"

तीजनबाई बहुत संतोष के साथ कहती हैं कि "मैं देश-विदेश सब जगह घूमी, सब जगह लोगों ने मुझे खूब स्नेह दिया-सम्मान दिया। मंच पर भी कभी कोई दिक्कत नहीं हुई। इसके कई कारण रहे। एक तो मेरी कद-काठी, व्यक्तित्व, मर्दाना आवाज, जिसके कारण किसी की कभी कुछ हिम्मत नहीं पड़ी। दूसरा शालीन स्वभाव और तीसरा देवी-देवताओं की कहानी का प्रभाव।"

जिस गाँव में जन्मी, उसी गाँव में बेटे-बेटियाँ, बहू नाती-पोतों से भरे मोहल्ले में तीजनबाई अपनी बेटी के घर में नाती नातिन के साथ बहुत स्वाभिमान से रहती हैं। भिलाई स्टील प्लांट (बीएसपी) ने ना केवल तीजनबाई को नौकरी दी, अपितु उनकी कला के उत्कर्ष हेतु सतत् मंच भी उपलब्ध कराया। बीएसपी के प्रति अपनी कृतज्ञता जताते हुए तीजनबाई ने ग्रामवासियों और छत्तीसगढ़ के प्रति भी आभार व्यक्त किया। आने वाली पीढ़ियों तक इस कला को पहुँचाने हेतु तीजनबाई ने बहुत सारे युवाओं को पंडवानी की शिक्षा दी। जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न शिविरों के माध्यम से कला का प्रशिक्षण भी दिया। लेकिन अभी तक कोई समर्पित योग्य शिष्य न मिल पाने का मलाल भी उन्हें खूब है। मोबाइल, टीवी, इंटरनेट के द्वारा मनोरंजन के बढ़ते साधनों का लोक-संस्कृति पर पड़ने वाले किसी भी तरह के प्रभावों को नकारते हुए वह कहती हैं कि लोककलाएँ कभी नहीं मरेंगी। वो समय के साथ अपना सुयोग्य पात्र चुन लेती हैं। और फिर पूरे सज-धज के साथ प्रतिष्ठित हो जाएँगी।

अंत में तीजनबाई ने युवाओं हेतु अपने संदेश में कहा कि शॉर्टकट के चक्कर में कभी नहीं पड़ना चाहिए। युवक-युवतियाँ पूरी मेहनत करेंगे, सपने देखेंगे तो जरुर सफलता मिलेगी।

तीजनबाई आज न जाने कितनी युवतियों की आदर्श हैं। उनकी असाधारण यात्रा कलासाधकों के लिए एक मिशाल है, लेकिन अपने निजी जीवन में आये दुःखों के बादल से उनका मन इतना भारी है कि वह यह कहने से अपने-आपको नहीं रोक पायीं कि 'ईश्वर करे तीजन जैसा जीवन किसी भी स्त्री का न हो।'